

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४१६/पु०

ग्रंथ नाम प्राणि.

विषय कथा-पुराणे.



Joint project of the Rajawade Sanstha, Dhule and the Prashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

श्रीगणाधिपतये नमः श्रीसूरस्य नित्य नमः ॥ श्री
सुरप्र्यानमः ॥ अथ विराटपर्व ॥ भारव ॥ ओ देव
बालिजे श्रुष्टि ॥ वे सो निमाया देवि ज्यापाठिः ब्रह्मा
विष्णुमहेश्वर पोटि ॥ न नालिं बालुके ॥ १ ॥ के तु
कंठ उ निया नाव ॥ रज विसा का ने च्या भावं ॥ अ
व्यक्ता पाल किं श्व प्रवं ॥ याप दु निप हुड वि ॥ रात
या आदि पुरुषा श्व ॥ तत्तु ल ह्या वि श्वं भर गुल श्व
मि ॥ न मर कारु नि म ॥ मे ॥ साव धन णे प्र नय
॥ १ ॥ आता चो थ विराटपर्व ॥ नवर स सु धे चा सु
ध्या णि व ॥ श्रवण इ दिय चें वे भव ॥ अति ॥
नव नव देव ॥ १ ॥ रत्तं भटको नवा के गरु ॥ १ ॥
वन का टे व स मुद्र जीव नि ॥ इ श्वं भ ॥ १ ॥
रत्तं ॥ दुशन श्वान रि ध यि ना ॥ १ ॥ १ ॥

॥ ललातिवचने ॥ ते मधुर आथवनि पण ॥
णग्राहि जीवें प्राणें ॥ प्रेम करि निग्रथाथी ॥ ६ ॥ प्रयाग
जान्ह विच्यानिरा ॥ कांचकुपिका मरुनि चतुरा ॥ का
डिनेति रामेश्वरा ॥ आपिरो कार्य आवा ॥ ७ ॥ तेवहा
ब्धि मथुनि देखा ॥ व्यासकाटिल आमृतादका ॥ माहा
राष्ट्राब्धाच्या कपिका ॥ अरु निलोकां मजह स्ति ॥ ८
प्रसाद पाठविला प्रीति ॥ निरवकाश निसंत आति
कणद्वारा परममक्ति ॥ देहा लिंगासिंचणें ॥ ९ ॥ द्वा
दशवरी आरण्यावारा ॥ सारया मंमरं कुरा नरेश ॥ दि
र्घदिष्टिगुणविशेष ॥ विचारविवरितो आयका ॥ १० ॥
न्योद्यबंधु आणि ज्ञापदि ॥ धौम्यविवेकाच्या विदधि
या ते ह्मणें विशाल बुद्धि ॥ बुद्धिप्रद मजहार्डे ॥ ११ ॥
नक्षत्र्य आस्तात वासा ॥ कवण ठाई कमाविकेस ॥ श
तुसिकळल्या विशेष ॥ महद्देशनिपाडिति ॥ १२ ॥ जरि

28

आलु मा लु हाय ॥ तरि पु उ ति बा रा क र्मु नि त रा वें ॥
असं करित करि त श्य भा वें ॥ आयु शो ग ले या त किं ॥ १३ ॥
धौ म्य ह्मणे वि चार सु म ति ॥ काय सा म्प्र म सि चि ता वें ति
हा णा र ते प्रारब्ध ग ति ॥ आपें आप हे त सं ॥ १४ ॥ य क्षा
चि ये वर वि शे षि ॥ रा पें पा ल ट ति अपे सिं ॥ ना वें न क ल
ति अे सिं ॥ ते हि आ य क र्म हा ॥ १५ ॥ के क ना म ठे वि लें
ध र्मा ॥ बू ल व ब नि ॥ १६ ॥ दे उ नि आं ग ने चि प्र ति
मा ॥ ब्र ह न टि आ ज ना द ॥ ग्रं थि क ना म न कु लो तें ॥
तं ति पा ल स ह दे वा त ॥ रा धि ह द्रा प दि तें ॥ कु वि म ना
मं पा चार ॥ १७ ॥ ध र्म रा जा चि या ध रि ॥ हो तो नि यो गि
आ धि का रि ॥ अ सं बा ले नि वि रा ट न ग रिं ॥ वि रा टा तें सं वि
जे ॥ १८ ॥ ले ट ल्यां आ ज्ञा त सं व स्तर ॥ पु ट कर आ व नि वि चार
॥ रा ज्य प्र सि चा प्र का र ॥ सा ध्य आ सा ध्य जा णा व या ॥ १९ ॥

ऐसें धौम्य आनुवाद तां ॥ परमसे तो शकौ तिसुता ॥ ब्रां
मणसंगिया आसता समस्ता ॥ आज्ञा देउ निपाठ वि॥ को
पिं पाचाळ देवा वस्ति ॥ कोपि हसस्य मपुरि प्रांति ॥ क्रुष्णा
वासुदेवा संगति ॥ नरीये कर्माव ॥ २१ ॥ कोपि धाडिले
हस्तनापुरा ॥ रेवदे आलहादे करव स्वरा ॥ आज्ञा तवास
युधिष्ठिरा ॥ कोटि कर ॥ २२ ॥ इद्रो नरथं सहि
ता ॥ रेवक सोय परम ॥ दारक धाडिले श्री क्रुष्णा
नाथा ॥ जह भावंपा ॥ २३ ॥ पदि चीया परिचा
रिका ॥ सख्या वेसिया आनका ॥ धुवृ दुर्गे देउ निसु
खा ॥ पात्रिये ल्या सुरवाडे ॥ २४ ॥ आग्नि हो त्रिसामग्रि
सिं ॥ धौम्य जाता पाचाळ सिं ॥ नितिसाग पोडवसि ॥
विराट संगिव सावय ॥ २५ ॥ नामरुप थोर पण ॥ कोपि

(३)

॥ २१ ॥

॥ २१ ॥

(3A)

८

हाउनेदावेज्ञान॥ दिनाहुनिपरमदिना॥ औसंलोका
वदावे॥ २६॥ दाउनिचातुर्यकुरा कृतं॥ मुर्वतनाणावे
प्रभुतं॥ समर्थबोलिलेजेनद्यडतं॥ तेचिशब्दिप्रति
ष्टा॥ २७॥ आसत्यनवाल्लिजसर्वथा॥ धरिजेनिर्मल
निलोभता॥ इंद्रीयनेमंतिश्वकना॥ होसवल्लभरा
याते॥ २८॥ राजाउपकार्यसंगं॥ नकरेवंहणे
निनहिजेमांगं॥ असावलाहस्वानिजावांगं॥ तोचि
वल्लभरायाते॥ २९॥ नागारेजातेःपुरि॥ पुढाठाकेर
णचवारि॥ दिधलिआज्ञावदिसिरि॥ तोचिवल्लभरा
याते॥ ३०॥ किजेसर्वासेआर्जव॥ कोठेनदाखविंवक्र
भावा॥ किजेसर्वासिगौरव॥ तोचिपोवेनिर्धारि॥ ३१॥ क
रणिकरुनियालपवि॥ महिमादुजयाचिवाढवि॥ माहा

येकाचितोपदवि॥ आपे आपपावत॥ १२॥ रायेनेमिले
व्यापारी॥ सावधानआहेरार्त्रि॥ आक्सनिद्राद्वकुनि
दुरि॥ तोचिवल्लभरायाते॥ १३॥ राजस्त्रियेसिसंवाह॥
राजपुराहितेसिवाह॥ पत्रमित्रेसिविनोद॥ जाणते
पुरुषिनकराव॥ १४॥ जालियामानहेआपमान॥ ह
शेविकादिनचलिमना॥ मासिकरूपसंपन्न॥ तेचि
पावेमहिमेते॥ १५॥ राजाशुन्यनायकेकानि॥ राज
निदानबोलवदनि॥ १६॥ मान्द्रातेसन्मानुनि॥ तो
चिमान्यनृपाते॥ १७॥ प्रभुनेबालविल्याबालेण॥
प्रभुपुसेलतेचिसांगेण॥ नपाचारितानाहिजाणें
तरिचपावेप्रतिय्या॥ १८॥ राजआसनिराजवहनिं
जाज्ययातेयेकांतस्थानि॥ बैसकानकरितोसद्गुणिं

मानपावे नृपाचा ॥३८॥ आपुलें प्रगटु नेणें ज्ञान ॥ नेण
तया नक्षत्रां आज्ञान ॥ याचें मुखें मधुर वचन ॥ तोचि
माने विश्वाते ॥३९॥ आसा तुझा जाणत्या प्रति ॥ काय
बालाणें बहु साल युक्ति ॥ सांगितलें सारि ति ॥ आज्ञात वा
सुकर्मा वा ॥४०॥ दृष्ट ईश्वरा विश्वाकुल मुर्ति ॥ स्मरणें आ
सावें आहोराति ॥ चरा दशावतार ॥ चिये आंति ॥ सिद्ध भ
टिसिये तसे ॥४१॥ सत्संगानि कुल नरेश ॥ धौम्य
गला पांचाल दशा ॥ धर्म नग विचार कैसा ॥ पुढं कर
णें बंधु हो ॥४२॥ आसा तया सपर गृहि वस्ति ॥ उदर नि
वाहक वणेरिति ॥ पाच हि जण ति ईये आर्यी ॥ संकट का
हिं आसेना ॥४३॥ धर्म भूषणें मि वदेन वाचा ॥ सप्ता पंडि
त पांडवाचा ॥ जाति ब्राह्मण सद्धि द्या ॥ संगृहो आसे
मजपासि ॥४४॥ रत्न परिक्षे मि कुशला ॥ खेला जाणें द्यु

तरेवह ॥ बुधिवल्लयुक्ति प्रबह ॥ मजसमान आसेना ॥ ४६ ॥
वस्तुपरिक्षाराजनिति ॥ समईजाणे विचारयुक्ति ॥ सह
जघडलिया संगति ॥ जाणवेल श्रवणावे ॥ ४६ ॥ बोधुनिया
नटपाचें मन ॥ बुधिनमुकाळ कठिण ॥ भिमहणे सुप्रसन्न ॥
मिहंकरि नमस्ते ॥ ४७ ॥ पाककता बल्लवनामा ॥ धर्मी
घरिमिसुदकमा ॥ भक्षणे जाणवेल तापमा ॥ निपजविन
श्रवस्तं ॥ ४८ ॥ भिमसांग तेदीव ॥ वारिरै कलाबाह्या
भ्यासा ॥ तो हिंदु निउलासा ॥ उपजविन रायासि ॥ ४९ ॥
असंबोलताच मकारा ॥ आंगिकारि लाराजे श्रव ॥ आ
जुनहणे हा विचार ॥ आमुचा हि परियसा ॥ ५० ॥ वश्ये
कउवसि साप ॥ तो शाप करावया निर्लाप ॥ आंगिअव
गानि आंगनासप ॥ राजयाते मेटणे ॥ ५१ ॥ नाटकवा
ल्लचिया कुमारि ॥ नाचउ जाणे कळकुसरि ॥ सारथ्यावि

(5)

॥ ४१ ॥

५४
 च्यविहिपरि॥ अर्जुनसंगं लाधलि ॥ ६२ ॥ पार्थकरिता संस्था
 न॥ नेमनिश्चयं लक्ष्मदेनं ॥ दुष्टिपाहता जालेशानू ॥
 यासद्गुप्तप्रसादं ॥ ६३ ॥ अशावदो नियागोक्ति ॥ काळकमुत्त
 यानिकटिं ॥ नकुल्लभे मां शीघ्रमेष्टि ॥ शालिहोतधनुवि
 द्या ॥ ६४ ॥ आश्वनाचवर्णनिगुति ॥ फिरफिरवर्णचक्राकुति ॥
 सिद्धपल्लवितो वतगति ॥ मेदमसेदवर्णं ॥ ६५ ॥ वासचा
 लवर्णंगगनिं ॥ वरानिवाणमुद्रजीवनिं ॥ असेंचोज
 दाउनिनयनिं ॥ मृगयकरि नराययि ॥ ६६ ॥ सहदेवाम्णे
 महिसिधेनु ॥ वृषभदमनिं आतिसुजाणु ॥ दोहनमथ
 निआतिनिपुणु ॥ सिस्यहोयक्रुष्णाचा ॥ ६७ ॥ क्रुष्णाहणे
 मिसेरंधि ॥ पांचालिचिसिष्टशाकुरिं ॥ विराटभार्यागुणसु
 दरिं ॥ आराधिनसुदेक्षा ॥ ६८ ॥ असेरियारचुनिउपाया ॥

(6)

॥६॥

मंत्र

दिवसकंदुधर्मराया॥स्मरोनियाश्रीकुष्णपायां॥साहिंजपे
चालिं॥ध्यापुटाचालताजगजेठि॥विराटनगराचिये
पाठि॥स्मशानभूमिचामिकठि॥विशाखवृक्षशमिचा॥६०॥
आर्जुनक्षणेरात्राते॥येथठवानिसुपवित्रं॥आभिमंत्रितां
माहामंत्रं॥दुष्टिकहणानपडति॥६१॥खडतरबिजाचेरुप॥
पाहताशस्त्रेदिसतिसपा॥मरुतवाोनियाकंप॥स्पर्शकोण्ठिं
नपवति॥६२॥खडावदितुष्टि॥चोपे॥प्रलयपावकाचिरुपे
पाहतासुर्याचियेवापे॥आकाशचपमा॥६३॥मृगचर्मि
वेष्टुनिनिगुति॥नकुठेठविलिवृक्षावरुति॥जेकांआपि
काचीयेहाति॥साध्यनहेतिसर्वथा॥६४॥वृधस्त्रियेचे
कळेवर॥तेथंबाधेलंभयेकर॥दुर्गाधिस्तवनारिहृर॥स
मिपकोण्ठिनयेति॥६५॥नगरप्रदेसिचनरशादुष्टा॥

(6A)

दुर्गा प्रसादुदेखिलाडोळा॥ दुर्गा भगवति विशाळा॥ लो
टांगणिवंदिलि॥ ६६॥ धर्मराज करि स्तवन॥ विस्वमाते
तुजनमन॥ तुजे वेगळे ब्रह्मज्ञान॥ ते सर्वथा घेडे चिना ६७॥
ब्रह्मचर कर आणि हरि॥ बाळकं जन्मलितु साउदरि॥ व
र्तति आपुलें व्यापारि॥ तुसी या आश्रज ननिये॥ ६८॥ तुसी
आश्रमंगिता देखे॥ ब्रह्मचर चतुर्मुख॥ लिंगपतनत्री
बक॥ कपाळपाणि तुव किल ६९॥ शंका आंगि पडलि भेगं
राशांक व्यापिल माहारागं॥ तुसी ये आश्रमंगे॥ आ
विधि मार्गे वर्ततां॥ ७०॥ करु नयेतं कर्म करेण॥ श्रेष्ठिक जी
तारा हाट्येण॥ ते तुसी आश्रज जाण॥ वेदवचन यथार्थ॥ ७१॥
तो आमते घडला देवा॥ हणो निमोगुठार प्यवास॥ आतां
उगवो निरुपादिवस॥ निशानासि आवदवा॥ ७२॥ जेव

काव्यक्त दिसं॥ तंतंतु सेचि श्वरप आसं॥ तु सेनि श्रयं के
सं॥ विश्व सकल चा छिजे॥ ७३॥ तारातु चि उक्ता गमिं॥
गौरि भगवति शैव धर्मि॥ वज्रा देविय याना मिं॥ कौलि
काचारिं बोलिजे॥ ७४॥ जेन क्षण ति पद्मावति॥ त्रिपदा
गाय त्रिवेद मति॥ सांख्य मति प्रकृति॥ आदि शक्ति व्या
पके॥ ७५॥ ते आवतार थार विगो कृतिं॥ जन्म लि सितं
दा कृतिं॥ कंस कुला का निहं॥ चैद्य मां गंध आदि
ले॥ ७६॥ उक्ते को निध र्मु ति चि सुति॥ प्रत्यक्ष जालि आ
दि वा कि॥ मौलि स्पर्श नि या हा ति॥ आश्वासित सुवाचा ७७॥
वरीयेक वसिं जे येयं॥ वैरि पावति आप जया ते॥ पुढं भो
गाले मेदि नितं॥ सां गरां तेय का शा॥ ७८॥ आभय दे उ नि
या हा ति॥ लोच ना आगे चर भगवति॥ पुढं राज सभे प्रति॥

धर्मसाजापातला॥७९॥ वदेनिया आसिर्वचन॥ ह्मणे राया
स्वस्तिकल्याण॥ सुपहंया कोठिलकवण॥ किमर्थ येणया
वाया॥८०॥ देससि सुयाहु निसे ज्वळा॥ आंगिं उेश्व
याचिकळा॥ पृथ्विचिया सुपाळां॥ अष्ट उंगें भाससि॥८१॥
धर्म आनुकोदे हा सोना॥ व्याघ्रपादवा रेवजनन॥ आ
त्रगोत्रिमिब्राह्मण॥ होय का श्रित धर्माचा॥८२॥ सभा
पंडित धर्मा निकट॥ जालि पां राज्य फृष्टा॥ तुंका
मिक परम अष्ट॥ अवे विजाले तुज पासि॥८३॥ आ
ही वेदसाहि शारित्रि॥ परिचन आसे आगम मंत्रि॥ उप
सनायंत्र तंत्रि॥ बुधिकुटित आसचिना॥८४॥ खेळे जा
णें द्युत खेळ॥ आसस्य भावाणि नसि वें वेळ॥ रत्त परि
क्षे मिकु शर॥ केंकनाम पेमा सं॥८५॥ जाणें वस्तु निपरि
क्षा॥ बहुकायबाले विचार दक्षा॥ राजात्मणे मज आप

४
७॥
क्षाम संगतिचिबहुआसें ॥ ८६ ॥ आसनवसनमानधन ॥
ईछेसारिखेनिवेदन ॥ आताखुकरिंमन ॥ मजसंगति
आसोवे ॥ ८७ ॥ आनुवादेनिअहमेदि ॥ वैसविआस
नानिकटि ॥ पुडतिवेजेदेवेददि ॥ सभाखानिने ७॥
दा ॥ ८८ ॥ केनकचवतुल्यसरका ॥ हातिकवहिलेंप
चंडमुसका ॥ इविस्विकटिमंडका ॥ पोलिकायंत्र
गोमलें ॥ ८९ ॥ जोहरेनिरेदेतमा ॥ हनेमिंबलुव
सुदकमा ॥ धमावडितरतमा ॥ भक्षमाज्यनिपज
वि ॥ ९० ॥ लेहंपेहेखाद्येखें ॥ आनेंपरमांनेपाय
सं ॥ शारवाकयिकासुवासें ॥ वेधुलाविनवसंता ॥ ९१ ॥
मिमरेनचिसंगति ॥ बाकाप्यासआहाराचि ॥ क
रितामल्लाचियापंगति ॥ मोनदिजेवहिएं ॥ ९२ ॥

(४१)

आतादेउनियापोटा॥घेईपाकक्रियेचियाकव्या॥आ
णिकहिनेरेद्वेष्टा॥करणिदाविनपुठारिं॥१३॥आ
वस्यनणेनिराजेस्वर॥पाकक्रियेचाआधिकार॥दे
उनिबल्लववरकोदर॥पाकया॥केस्थापिला॥१४॥चिर
कंचुकिकरमुत्राणे॥वर्णिताटोवसुमुत्राणे॥च्यात
वेणिदिव्यांजने॥तत्रकर्मविशेषमति॥१५॥आव
गोनिआगनारूप॥सरसातलाआर्जुनमुपारा
जाहणेलावण्यदि॥वर्णकोठिलउजळला॥१६॥
नणवेपुरशकिवानार॥अमानसाहेपृथिवरिं
स्त्रियतलेपोनिबाहेरि॥पुरशतेजविरोजे॥१७॥
हणेधर्माचियेधरिं॥नाटकवाळानाचविंनारि॥
गायनसिकविंरागेधारिं॥गीतप्रबंधसुताळ॥१८॥

७
अर्जुनासंगिवैसतारथिं ॥ वारुवागंविंआपुलेहातिं ॥
युधिना नागतिविगति ॥ सारथ्यविद्यालाधलि ॥ ९९ ॥
खांडवदाहदिआर्जुनयुद्धं ॥ द्रष्टिदखिलम्याविवि
धं ॥ पार्थगुणच्याप्रसाद ॥ संग्रामकलाजोडलि ॥ १०० ॥
संगिआसनासमई ॥ कलायैलबालणेंकाई ॥ राजा
संतोबोनिद्रदई ॥ सर्वकामनंवाळला ॥ १०१ ॥ तोशो
नियाआमृतोतरी ॥ नंदनराळेचया नारि ॥ स्वाधि
नकरुनितेआवस्वरि ॥ इतुनदळेविलि ॥ १०२ ॥ प्रतो
दचाबुकधरुनिहाति ॥ नकुळबालराजयाप्रति ॥ आस्व
सिक्षाकर्तासुमति ॥ राठितविद्येकुळगुरु ॥ १०३ ॥ कडोविक
डिनाचवणें ॥ पळवणेंठिकणेंउडवणें ॥ आवरणेंमुखस
शा ॥ १०४ ॥ वारुचालवणेंनिराळें ॥ बेसोनितरिजेसिधुज

१४

ओसिपारलेओसिनारि॥

॥सहस्ररथियाचेंमंडकि॥येकरथिविभांडि॥१०॥धोड
कियामिराजगुरु॥जाणोनिरालियुधिष्ठिर॥तोगेलियांतव
आधार॥धरुनिआलेतुजपासि॥१०॥६॥हृदईधरुनिनृपा
॥स्वामितुदिधलेआस्वशा॥॥सहदेविज्ञणेआस्वकुरा
॥नावेकदृष्टिविलोका॥१०॥७॥धर्मघरिचोमिरिवलारि॥
आपेटवराभसहस्रवरि॥येकलाआगवणआवधारि॥सिखा
करिमातलिया॥१०॥८॥धेनुमहिसिकरसुरवाडो॥दुग्धप्रसवति
सरितापाडें॥नफळति॥हफळतेकोडें॥हस्तस्पर्शमाझीया॥
सध्याप्रसवतिवासुरें॥हाचिचकाराहाजिचतुरें॥राजाह
णाराजरिवल्लोरें॥तुसंहतेंवापलि॥१०॥९॥यावरिदोपदिसु
दरि॥येतांदेखिलिनगरनारि॥मृणतिमुर्तिमंतगोरि॥नव
नागरिसुरकन्या॥१०॥१०॥सुदेष्टेंसागतिवचनि॥विचित्रलाव
ण्याचिस्वाणि॥सकुमारजातिचिपद्मिणि॥रूपनयनिनसंटे
१२॥कवणतेनेपावेनिर्धारि॥पाचारुनिआपुलाघरि॥पवित्र
संगिंटविजे॥१०॥११॥पाठुनिपरिवारिके॥आवलोकितापरमसुरेव

तुक्षिपस गतिव सणे आसि॥

१४॥ द्रोपदिहणे भिसेरंधि॥ याज्ञसेनिचि
सवाकरि॥ तेगेलियातुसे घरि॥ का॥ १५॥ सुदेष्ण
हणे गुणेकरसि॥ मासिस्वामिणि औमदिसुसि॥ मासीयबहिणि
हुनिविरोषि॥ मजसंगतिआसावं॥ १६॥ कार्यसांगतावाटलज
दिससिचक्रवर्तिचि॥ मा॥ माणिक्किलेजवहिकगुंज॥ तेविमिं
दिसंतुजपुढं॥ १७॥ द्रोपदिहणे नवदेअसं॥ सत्यमानुनिसुमा
नसं॥ सवाघईमजहाति॥ १८॥ उनि॥ १९॥ आ॥ चि॥ भोजन॥ पराचं
चरणप्रक्षालण॥ दोनि॥ २०॥ मि॥ दास्यकरि॥ नमिंतुसे॥ २१॥
येरिहणे सुमध्यमे॥ दोनि॥ २२॥ ग्यतुजउत्तमे॥ मानेमासेनिस
मागमे॥ मजसमानसु॥ २३॥ सुदेष्णहणेवोसुंदरि॥
आसनवसनमाझियोसरि॥ सितुनिआसंमममदिरि॥ संसय
नधरिपवित्रे॥ २४॥ औसंबोलेनिपरमप्रिति॥ द्रोपदिठेविलिसे
गति॥ विशमकाळाचिविचित्रगति॥ चतुरपुरषंजाणिजे॥ २५॥
साहिजेणे औसियापरि॥ गुसुठलिविराटनगरि॥ राहाटिघउलेंत
पुढारि॥ जगप्रसिधपरियसा॥ २६॥ मार्ज॥ पिलियाऔसकारि

(108)

कुंजरबाह्वकैसंसावे ॥ आंधकारिं छपता अर्कि ॥ लोक देखि न
लोपं ॥ २४ ॥ लपवितांकसुरिपरिमळ ॥ सर्वत्र प्रगटनगरि आनिह
तेवितयाचा गुप्तरवेळ ॥ भरिनाटजग श्रवणि ॥ २५ ॥ जैसियापि
जन्मजया ॥ आज्ञांतवोसंवसतातयां ॥ कैसेवर्तलेराया ॥ चरित्रप
वित्रपरियसा ॥ २६ ॥ मुक्तस्वराचिगुणसुढाळ ॥ वाक्यनुतनमुका
फळ ॥ सज्जनराजहंसपाळ ॥ साम्यापाळसेविति ॥ २७ ॥ इति
श्रीमहाभारते विसाटपविष्टावध्यायः ॥ १ ॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com